संवेगात्मक बुद्धि: एक समीक्षा

शशिकांत मिश्रा* डॉ. दीपा अवस्थी **

*शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

** सहायक आचार्या, शिक्षक शिक्षा विभाग, आचार्य नरेंद्रदेव टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, सीतापुर

Article History:

Received: 18-08-2025

Accepted: 20-09-2025

Published: 30-09-2025

Keywords:

संवेगात्मक बुद्धि, संवेगात्मक बुद्धि गुणांक/ई.क्यू आई गुणांक

Page No.: 203-208

Article code: V2025023

Access online at: https://veethika.co.in

Source of support: Nil

Conflict of interest: None declared

Published By: Pt. R.S.T.M. Society, Lucknow, India

Corresponding Author:

शशिकांत मिश्रा

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Email: shas.kant17@gmail.com

शोध-सार

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा अति आवश्यक है। विद्यार्थियों का बौद्धिक स्तर अभिक्षमता, संवेग, मूल्य, अध्ययन आदत, समायोजन आदि अनेक कारक हैं जो विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं इन सभी कारकों में बुद्धि को प्रमुख स्थान प्राप्त है। सामान्यत: यह स्वीकार किया जाता है कि जिनमें सीखने की क्षमता, तार्किक क्षमता तथा अमूर्त चिंतन की योग्यता उच्च कोटि की होती है वे अध्ययन में उच्च परिणाम प्राप्त करते हैं।इस क्षेत्र में किए गए अनेक शोध परिणाम यह बताते हैं कि बुद्धि व उपलब्धि में सकारात्मक संबंध होता है।विगत कुछ वर्षों से यह माना जाने लगा है कि व्यक्ति की सफलता उसकी बुद्धि पर निर्भर करती है परंतु सफलता का अधिकतम श्रेय संवेगात्मक बुद्धि को प्राप्त होता है।उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थी स्वयं तथा दूसरों की भावनाओं को समझने ,नियमन करने तथा उसे सही दिशा में संचालित करने की योग्यता रखते हैं यही इनकी सफलता का आधार होता है।

उक्त शोध पत्र द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के उदभव के सिद्धांत के रूप में विकसित होने की यात्रा का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना -

संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति की उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगो को जानने समझने तथा उनकी ऐसी उचित अनुभूति एवं अभिव्यक्ति करने कराने में इस प्रकार मदद करे कि वांछित व्यवहार तथा उसके सापेक्ष अनुक्रियाएं कर सके जिससे उसे दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अपना समुचित हित व्यक्त करने हेतु अधिकतम अवसर प्राप्त हो सके। यद्यपि संवेगात्मक बुद्धि का प्रत्यय नवीन है परन्तु भारतीय पौराणिक कथाओं ग्रंथों,कथाओं में इसकी उपस्थिति प्राचीन कल से ही विद्यमान रही है । आज से लगभग 5000 ईसा पूर्व भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण का स्थितिप्रज्ञ पुरुष (भावात्मक रूप से स्थित व्यक्ति) का प्रत्यय प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जॉन मेयर एवं पीटर सॉलोवे के संवेगात्मक बुद्धियुक्त व्यक्ति से समानता प्रदर्शित करता है। लगभग 2000 ईसा पूर्व महान दार्शनिक प्लेटो ने कहा था "समस्त अधिगम का आधार भावनात्मक होता है।" प्लेटो का यह कथन निसंदेह संवेगात्मक बुद्धि को अपना समर्थन प्रदान करता है। तभी से वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, दार्शनिकों एवं शिक्षकों के लिए द्वारा भावनाओं के महत्त्व को प्रमाणित करने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। 19 वीं शताब्दी तक भावनाएं केवल पूर्वानुमान के रूप तक ही सीमित नहीं रह गईं वरन इसके भौतिक मापन पर भी विचार किया जाने लगा साथ ही यह स्वीकार किया जाने लगा कि भावनाएं विचारों से संबंधित होती हैं यही मत आगे चलकर भावनाओं और विचारों के मध्य परिशुद्ध शोध की नींव बना।

हम अपने दैनिक जीवन मे अनेक प्रकार की भावनाओं का अनुभव करते हैं परंतु मानव व्यवहार पर भावनाओं का प्रभाव प्राचीनकाल से ही चिंतन का विषय रहा है। प्रस्तुत शोधपत्र द्वारा संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित उपलब्ध साहित्य की समीक्षा की जाएगी साथ ही भारतीय परिप्रेक्ष्य में संवेगात्मक बुद्धि को समझने का प्रयास किया जाएगा।

उद्देश्य

1. संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को समझना
2. संवेगात्मक बुद्धि के घटकों की पहचान करना
3. संवेगात्मक बुद्धि के विकास के तरीकों की पहचान करना
4. संवेगात्मक बुद्धि के महत्व का मूल्यांकन करना

प्रस्तुत उद्देश्य द्वितीयक स्रोतों द्वारा प्राप्त किए गए हैं। शोधकर्ता ने संवेगात्मक बुद्धि: एक समीक्षा के संबंध में शोधपरक जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की पुस्तकों तथा संबंधित वेबसाइटों द्वारा प्राप्त जानकारी को लेखबद्ध किया है ।

शोध प्रश्न

1. संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा का मूल स्वरूप क्या है?
2. संवेगात्मक बुद्धि के प्रमुख घटक कौन- कौन से हैं?
3. संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न प्रतिरूपों में संवेगात्मक बुद्धि की व्याख्या किन आधारों पर की गयी है?
4. भारतीय दार्शनिक परंपरा में संवेगात्मक बुद्धि को किस प्रकार समझा और प्रस्तुत किया गया है?
5. शैक्षिक संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का क्या महत्व है?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र की प्रकृति अवधारणात्मक है जिसमें द्वितीयक स्रोतों के आधार पर जानकारी को एकत्र करके उपरोक्त शोध प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया गया है|

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का ऐतिहासिक संदर्भ

विगत शताब्दियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास –

सन 1900-1969: बुद्धि एवं भावनाएं पृथक सूक्ष्म क्षेत्र के रूप में -

1-बुद्धि संबंधी अनुसंधान -

मनोमितीय दृष्टिकोण से बुद्धि का विकास एवं परिष्करण।

2- भावनाओं से संबंधित अनुसंधान -

मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं और भावनाओं का अध्ययन। डार्विन के सिद्धांत आनुवांशिकता और भावनात्मक प्रतिक्रिया को सांस्कृतिक स्वीकृति।

सन 1970-1989

अनुभूति और प्रभाव के क्षेत्र के अंतर्गत भावनाओं के विचारों पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। गार्डनर की बहु बुद्धि सिद्धांत अंत:व्यक्तिक बुद्धि एवं अंतरव्यक्तिक बुद्धि को स्पष्ट किया। सामाजिक बुद्धिमत्ता के अनुभाविक कार्य आधारित घटक सामाजिक कौशल सहानुभूति कौशल नीरस दृष्टिकोण एवं संवेदनशीलता। भावनाओं और अनुभूतियों के बीच के संबंध को मस्तिष्क के अध्ययन द्वारा पृथक किया जाने लगा। संवेगात्मक /भावात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग। बाल मनोवैज्ञानिक स्टेनली ग्रीन स्पेन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक विकासात्मक मॉडल प्रस्तुत किया जिसे विकासात्मक व्यक्तिगत भिन्नता, संबंध आधारित डी.ए.आर. मॉडल के रूप में जाना जाता है। यह अवधारणा बच्चों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समग्र विकास की अवधारणा को आकार देने तथा समग्र विकास पर जोर देती है।

सन 1990- 1993 संवेगात्मक बुद्धि पर किए गए अनुसंधानों का प्रादुर्भाव-

जॉन मेयर तथा पीटर सोलावे द्वारा भावनात्मक बुद्धि पर आलेखों की श्रृंखला का प्रकाशन किया गया। इन्होंने E.I की संकल्पना दी जिससे भावनाओं को समझने, भावनाओं, विचारों को सुगम बनाने के लिए एकीकृत करने और भावनाओं को विनियमित करने की क्षमता शामिल थी। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को पारस्परिक बुद्धि से अलग माना गया और वास्तविक जीवन के परिणामों की भविष्यवाणी में महत्वपूर्ण पाया गया। इस अवधि के दौरान भावनात्मक बुद्धिमत्ता के दावे को अनुभवजन्य समर्थन मिलना प्रारंभ हो गया जिसमें कहा गया कि यह जीवन की सफलता का सबसे अच्छा भविष्यवक्ता हो सकता है।इस समय शोधकर्ताओं ने भावनाओं के विचारों और निर्णय लेने पर प्रभाव का भी अध्ययन प्रारंभ किया जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता के क्षेत्र को और विकसित करने में सहायता करता है।

सन 1994-1997 लोकप्रियता और वितरण-

गोलमैन की पुस्तक इमोशनल इंटेलिजेंस व्हाय इट कैन मैटर मोर दैन आई. क्यू. विश्वव्यापी खरीदी जाने वाली पुस्तक बनी। टाइम मैगजीन द्वारा भावनात्मक बुद्धि गुणांक को अपने मुख्य पृष्ठ पर स्थान दिया गया। भावनात्मक बुद्धि का मिश्रित सिद्धांत प्रकाशित हुआ।

सन 1998- से वर्तमान तक संस्थागत रूप से संवेगात्मक बुद्धि पर अनुसंधान –

संवेगात्मक बुद्धि पर संस्थागत शोध में काफी वृद्धि हुई जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका और प्रभाव का अध्ययन किया गया। शिक्षा, कार्यस्थल तथा व्यक्तिगत संबंधों में संवेगात्मक बुद्धि के महत्व पर बल दिया गया।1998 के बाद से अनुसंधानकर्ताओं ने संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जैसे की आत्म जागरूकता , आत्मनियमन, प्रेरणा, सहानुभूति, सामाजिक कौशल। संवेगात्मक बुद्धि पर का प्रभाव कार्य स्थल में प्रदर्शन, नेतृत्व टीमवर्क ,निर्णय लेना, समस्या समाधान। शिक्षा, प्रशिक्षण, व्यक्तिगत विकास कार्यक्रमों के माध्यम से संवेगात्मक बुद्धि का उन्नयन। 2020 के एक मेटा विश्लेषण में पाया गया कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र स्कूल में उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी सामाजिक कौशल और सहपाठी संबंधों के नियमन में दक्ष होते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि का क्रमागत इतिहास -

लगभग 5000 ईसा पूर्व भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण को स्थितप्रज्ञ के रूप में प्रदर्शित गया। लगभग 2000 ईसा पूर्व प्लेटो के साहित्य में भी भावात्मक बुद्धि की छवि परिलक्षित होती है। स्पिनोजा (1687) का मानना था कि भावना और बुद्धि मिलकर अनुभूति के मापन में योगदान देते हैं थार्नडाइक (1920) में सामाजिक बुद्धिमत्ता की अवधारणा प्रस्तुत की जिसे भावनात्मक अभिप्रेरक बुद्धिमत्ता में विभाजित किया जा सकता है। डेविड वैश्लर (1940) में बताया कि बुद्धि बौद्धिक और व्यक्तित्व लक्षणों और अन्य बौद्धिक घटकों जैसे की भावनात्मक, सामाजिक और व्यक्तिगत कारकों (चिंता, दृढ़ता लक्ष्य, जागरूकता) से प्रभावित होती है। डेविड वैश्लर ने भावात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास का एक एकीकृत अंग पाया। लीपर(1948) ने भावनात्मक विचार को बढ़ावा दिया जिसके बारे में इनका मानना था कि यह तार्किक विचार के विकास में अपना योगदान देती है। मानवतावादी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मैसलो(1950) द्वारा भावनात्मक शक्ति विकसित किए जाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। मार्वरर(1960) ने भावनाओं को उच्चतर कम की बुद्धिमत्ता माना। टॉमकिंस (1962) का मानना था कि प्रभाव के बिना तर्क नपुंसक होगा और बिना कारण के प्रभाव अंधा होता है। सन (1975) में हरबर्ट गार्डनर द्वारा "द स्टैंडर्ड माइंड" में बुद्धि का बहुबुद्धि सिद्धांत के रूप में प्रकाशन किया गया। सन (1985) में वेन पायने ने अपनी डॉक्टरेट थीसिस "ए स्टडी ऑफ़ इमोशनल डेवलपिंग इमोशनल इंटेलिजेंस" ने भावात्मक बुद्धिमत्ता पर साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पायने ने इस बात पर जोर दिया की भावनात्मक बुद्धिमत्ता जन्मजात नहीं होती बल्कि इसे समय के साथ विकसित किया जा सकता है। सन 1987 में कैथ वैसली द्वारा भावनात्मक बुद्धि गुणांक शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अपने आलेख में किया गया। बाद में रिव्यूवेन बार - ऑन द्वारा सर्वप्रथम स्नातक शोध पत्र में इस शब्द को प्रयुक्त करने का दावा किया गया जो की प्रकाशित नहीं हो पाया था।

1989 में बाल मनोवैज्ञानिक स्टेनली ग्रीन स्पेन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक विकासात्मक मॉडल प्रस्तुत किया जिसे विकासात्मक व्यक्तिगत विभिन्नता संबंध आधारित मॉडल के रूप में जाना जाता है यह अवधारणा बालकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समग्र विकास को आकार देने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। 1990 में मनोवैज्ञानिक पीटर सॉलोवे जान मेयर और डेनियल गोलमैन के मौलिक कार्यों के माध्यम से भावनात्मक बुद्धिमत्ता को सुदृढ़ता और व्यापक मान्यता मिली और यह प्रमाणित हुआ कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्रों के शैक्षणिक रूप से सफल होने की संभावना अधिक होती है। 1990 में पीटर सॉलोवे और जान मेयर ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर महत्वपूर्ण शोध पत्र लिखा जो "इमेजिनेशन कॉग्निशन एंड पर्सनैलिटी पत्रिका" में प्रकाशित हुआ इन्होंने इसे अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने ,वर्गीकृत करने और उस पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया ताकि वह अपने निर्णय और व्यवहार को आकार दे सकें। सन 2000 में डेविड कारूसो, पीटर सॉलोवे और जॉन मेयर द्वारा निर्मित मेयर सालोवे कारूसो भावनात्मक बुद्धिमत्ता परीक्षण का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता को वस्तुनिष्ठ रूप से मापन था इस परीक्षण ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के सभी घटकों का गहन मूल्यांकन कर उसकी शैक्षणिक तथा व्यवहारिक उपयोगिता को प्रमाणित किया। सन 2004 में विद्वानों के नेतृत्व में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विषय पर गहनता से अध्ययन कार्य प्रारंभ किया गया अनेक शोध कार्यों से प्राप्त निष्कर्षों के परिणाम स्वरुप यह प्रमाणित हुआ कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति नेतृत्व अनुकूलन तथा संगठनात्मक उपलब्धियों को आगे बढ़ाने में अधिक कुशल होते हैं।

सन 2010 के दशक में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शिक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी में व्यापक रूप से एकीकृत किया गया जिससे शिक्षण प्रक्रिया को अत्यधिक प्रभावशीलता प्राप्त हुई। सन 2011 में शैक्षिक कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करने की लोकप्रियता बढ़ी इसके परिणाम स्वरुप सामाजिक बुद्धिमत्ता,पारस्परिक बुद्धिमता और संज्ञानात्मक योग्यता को बढ़ाने पर जोर दिया जाने लगा। • सन 2013 में शोधकर्ता ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और परिफ्रंटल कार्टेक्स जैसे मस्तिष्क क्षेत्र के बीच संबंधों की जांच की जो भावना नियंत्रण से घनिष्ठ रूप से संबंधित थे। सन 2015 में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर शोधकर्ताओं ने नए क्षेत्रों में विस्तार किया शोधकर्ताओं ने अध्ययन के उपरांत पाया की भावनात्मक बुद्धिमत्ता को कृत्रिम बुद्धि प्रणाली के साथ एकीकृत किया जा सकता है जिससे भविष्य में भावनात्मक रूप से विकसित कंप्यूटर का निर्माण किया जा

सकेगा। सन 2000 में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को महत्व प्रदान किया जाने लगा अपनी भावनात्मक अवस्थाओं और सामान्य स्वास्थ्य को बेहतर बनाकर व्यक्ति अपनी सामाजिक पारस्परिक और संज्ञानात्मक बुद्धिमत्ता ने सुधार कर सकते हैं। हावर्ड बिजनेस रिव्यू में प्रकाशित अध्ययनों सहित कई अध्ययनों ने भावात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी के प्रदर्शन के साथ-साथ शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध को प्रदर्शित किया। सन 2024 में भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भ में अनेक शोध कार्य किए गए जिससे भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अभिव्यक्ति एवं विकास को नवीन क्षेत्र की प्राप्ति हुई। 2025 में किए गए अनुसंधानों में व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं प्रौद्योगिकी में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव पर अनेक अनुसंधान किए गए तथा दूसरों के साथ संबंधों और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व पर जोर दिया गया।

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के घटक-

- भावनाओं को महसूस /ग्रहण करने शाब्दिक तथा अशाब्दिक संकेतों के रूप में।
- भावनाओं की विवेचना/ तर्क करना चिंतन एवं समझ द्वारा भावनाओं की प्राथमिकता तय कर प्रतिक्रिया देने में।
- भावनाओं को समझना।
- भावनाओं को सुव्यवस्थित करना।

संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिरूप-

संवेगात्मक बुद्धि क्षमताओं, कौशल, स्वज्ञान पहचान करने की योग्यता, मूल्यांकन तथा दूसरों एवं समूह की भावनाओं को सही दिशा में संचालित करने की योग्यता के रूप में व्यक्त की गई है। संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिरूप निम्नलिखित हैं –

मेयर - साल्वे कारयूसो योग्यता प्रतिरूप –

योग्यता आधारित भावनात्मक बुद्धि का प्रतिरूप (1997) जो की गार्डनर के शोध कार्य विषय व्यक्तिगत बुद्धि पर आधारित था। इस प्रतिरूप में भावनात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग भावनात्मक आयाम के रूप में किया गया। 1997 में इन्होंने बुद्धि को पुनः परिभाषित करते हुए चार प्रारंभिक शाखाओं, भावनात्मक अनुभूति, ग्रहण बोध, भावनात्मक आत्मसातीकरण, भावनात्मक प्रबंधन में विभक्त किया जिन्हें विभिन्न अनुभूतियों से संबंधित किया गया।

गोलमैन का संवेगात्मक बुद्धि प्रतिरूप-

डेनियल गोल्डमैन के संवेगात्मक बुद्धि प्रतिरूप में संवेगात्मक दक्षताओं का संग्रह सम्मिलित किया गया गोलमैन के अनुसार भावनात्मक योग्यताएं जन्मजात प्रतिभाएं ना होकर अधिगमित होती हैं और उनके अभ्यास द्वारा आश्चर्यजनक प्रतिफल प्राप्त किया जा सकता है। डेनियल गोलमैन(1995) का प्रतिरूप भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चार प्रमुख गुणों पर निर्भर है-

1- स्वचेतना/अभिज्ञान - सहज बोध के आधार पर किसी की भावनाओं एवं उनके प्रभाव को पहचानने की क्षमता।
2- स्वप्रबंधन- किसी की भावनाओं, आवेंगो को नियंत्रित करने और परिवर्तनकारी परिस्थितियों से अनुकूलन करना।
3- सामाजिक चेतना- सामाजिक तंत्र से दूसरे की भावनाओं को समझ कर प्रतिक्रिया देने में।
4- संबंधों का प्रबंधन- संघर्ष /परस्पर विरोध के नियंत्रण के साथ भी दूसरों को प्रेरित और प्रभावित करने की योग्यता।

भारतीय परिपेक्ष्य में संवेगात्मक बुद्धि – भारतीय पुरातन साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय साहित्य में भावनात्मक बुद्धि का प्रयोग विभिन्न संदर्भ में व्यापक रूप से हुआ है। भारतीय दार्शनिक परंपराएं प्राचीन काल से भावनाओं के शक्तिशाली प्रकृति की पक्षधर रही है। भारतीय मनोविज्ञान के पिता महर्षि पतंजलि द्वारा मानव मस्तिष्क के हिस्सों पर हजारों वर्ष पूर्व किए गए सुसंगठित शोध आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। विगत वर्षों में इस क्षेत्र में किए गए शोध परिणाम यह दर्शाते हैं की

भावनात्मक आत्म चेतना के बारे में भारतीय दृष्टिकोण संदर्भ के प्रति संवेदनशील है तथा व्यक्ति की भावनाओं को आकार देने में परिवार और समाज की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करता है।

शैक्षिक निहितार्थ -

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पर किए गए शोध कार्यों से न केवल शिक्षा के क्षेत्र में वर्णन मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष पर लाभकारी परिणाम प्राप्त किया जा सकते हैं भावनात्मक बुद्धि के संबंध में भविष्य में होने वाले शोधों द्वारा वर्तमान में स्थापित प्रतिरूपों की भांति न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है वर्णन अधिक प्रभावी मापन रणनीति हेतु भी कार्य करने की आवश्यकता है ।भावनात्मक बुद्धि का व्यापक ज्ञान नि:संदेह समाज तथा शिक्षा के उन्नयन में सहायता प्रदान करेगा।

निष्कर्ष

संवेगात्मक बुद्धि आज के प्रतिस्पर्धात्मक और जटिल जीवन में सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व बन गई है। यह न केवल व्यक्ति की भावनाओं की समझ और नियंत्रण की क्षमता को विकसित करती है, बल्कि उसे सामाजिक रूप से अधिक सहानुभूतिशील और उत्तरदायी भी बनाती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति अपने विचारों और व्यवहारों के प्रति सजग रहते हैं तथा तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी संतुलन बनाए रखते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है, क्योंकि यह शिक्षार्थियों में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे गुणों का विकास करती है। शिक्षक के लिए भी यह आवश्यक है कि वह विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझे और उन्हें उचित दिशा प्रदान करे। भारतीय परिप्रेक्ष्य में संवेगात्मक बुद्धि की जड़ें अत्यंत गहरी हैं, जो भगवद्गीता, उपनिषदों तथा योगसूत्रों में आत्मनियंत्रण और भावनात्मक संतुलन के रूप में विद्यमान हैं। आधुनिक युग में जब बौद्धिक क्षमता के साथ भावनात्मक परिपक्वता की अपेक्षा बढ़ रही है, तब संवेगात्मक बुद्धि का महत्व और भी बढ़ जाता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यक्ति के समग्र विकास, सामाजिक समरसता और शैक्षिक गुणवत्ता में संवेगात्मक बुद्धि की केंद्रीय भूमिका है, जिसे शिक्षा और अनुसंधान के माध्यम से सशक्त किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

एल्जीओ, जे. (2000) द भगवद्गीता, अ स्टडी कोर्स, द थियोसॉफिकल सोसाइटी इन अमेरिका

फ्रीडमैन, जे. (2002) इमोशनल वाट? डिफिनेशंस एंड हिस्ट्री ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस, ई. क्यू. टुडे मैगजीन

गायत्री, एन.एंड मीनाक्षी, के. (2013) भारतीय संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, ग्लोबल जर्नल ऑफ सोशल साइंस लिंग्विस्टिक एंड एजुकेशन 13(8),1-7

गार्डनर, एच.(1983) फ्रेम्स ऑफ माइंड: द थ्योरी ऑफ मल्टीपल इंटेलीजेंस, बेसिक बुक पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क

गोलमैन, डी.(1996) इमोशनल इंटेलिजेंस वाई इट कैन मैटर मोर देन आई. क्यू. लर्निंग 135-152

जेस्ट, डी.वी. एंड वाहिया आई. वी. (2008) प्राचीन भारतीय साहित्य में ज्ञान की अवधारणा की आधुनिक दृष्टिकोणों से तुलना: भगवद्गीता: मनोचिकित्सा पारस्परिक और जैविक प्रक्रियाएं 71(3),197-209

कृष्णवेनी, आर. एंड दीप, आर. (2011) डेवलपमेंट एंड वैलिडेशन ऑफ एन इंस्ट्रूमेंट टू मेजर द इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ एडल्टस इन द इंडियन कांटेस्ट, द इंटरनेशनल जर्नल्स ऑफ एजुकेशन एंड साइकोलॉजिकल असेसमेंट 7(2)94-118

मंगल, एस.के. (2013)शिक्षा मनोविज्ञान,नई दिल्ली, पी एच आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड

मेयर, जे. डी. एंड सोलावे, पी. (1997) वॉट इस इमोशनल इंटेलीजेंस, इमोशनल डेवलपमेंट एंड इमोशनल इंटेलीजेंस इंप्लिकेशंस 3,31

शर्मा, आर. (2012) मेजरिंग सोशल एंड इमोशनल इंटेलीजेंस कम्प्टेंसीज इन द इंडियन कॉन्टेस्ट, क्रॉस कल्चरल मैनेजमेंट एन इंटरनेशनल जनरल,19(1),30-47

श्रीवास्तव, ए. के.सीबिया, ए.एंड मिश्रा, जी. (2008) रिसर्च ऑन इमोशनल इंटेलीजेंस: द इंडियन एक्सपीरियंस: थ्योरिटिकल एंड कल्चरल पर्सपेक्टिव 135-152